*ॐ*

~~~~~~~~~~

# विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्  विषय-हिन्दी

दिनांक-09/11/2020

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

आप सबों की सारी परीक्षाएं संपन्न हो गई  हैं। अब हम लोग पुनः अपने पाठ्यक्रम पर आते हैं ,आज हमलोग कृतिका पाठ्य पुस्तक से 'माटी वाली' शीर्षक कहानी को पढेंगे जिसके लेखक विद्यासागर नौटियाल हैं। इस पाठ को पढ़ने से पूर्व हम लोग विद्यासागर के बारे में थोड़ी- सी जानकारी ले लें।

विद्यासागर नौटियाल (सन् 1933-2012) समसामयिक कथा-लेखक विद्यासागर नौटियाल का जन्म माली देवल गाँव (टिहरी गढ़वाल, उत्तरांचल) में हुआ और उच्च शिक्षा वाराणसी से। पहाड़ी जीवन विशेषकर टिहरी गढ़वाल के जीवन-यथार्थ के कुशल चितेरे नौटियाल जी की कथा-भाषा में मिट्टी को सौंधी गंध रची-बसी है।
~~~~~~~~~~

**प्रमुख कृतियाँ-टिहरी की कहानियाँ, सुच्ची डोर (कहानी-संग्रह); उलझे रिश्ते, बीम अकेली, सूरज सबका है, उत्तर बायाँ है, झुंड से बिछुड़ा (उपन्यास); मोहन गाता जाएगा (आत्मकथ्य)।**

# एन सी इ आर टी पर आधारित

## माटी वाली

__विद्यासागर नौटियाल

शहर के सेमल का तप्पड़ मोहल्ले की ओर बने आखिरी घर की खोली में पहुँचकर उसने दोनों हाथों की मदद से अपने सिर पर धरा बोझा नीचे उतारा। मिट्टी से भरा एक कंटर'। माटी वाली। टिहरी शहर में शायद ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसे वह न जानती हो या जहाँ उसे न जानते हों, घर के कुल निवासी, बरसों से वहाँ रहते आ रहे किराएदार, उनके बच्चे तलक। घर-घर में लाल मिट्टी देते रहने के उस काम को करने वाली वह अकेली है। उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं। उसके बगैर तो लगता है, टिहरी शहर के कई एक घरों में चूल्हों का जलना तक मुश्किल हो जाएगा। वह न रहे तो लोगों के सामने रसोई और भोजन कर लेने के बाद अपने चूल्हे-चौके की लिपाई करने की समस्या पैदा हो जाएगी भोजन जुटाने और खाने की तरह रोज की एक समस्या। घर में साफ, लाल मिट्टी तो हर हालत में मौजूद रहनी चाहिए। चूल्हे चौकों को लीपने के अलावा साल- दो साल में मकान के कमरों, दीवारों की गोबरी-लिपाई करने के लिए भी लाल माटी की ज़रूरत पड़ती रहती है। शहर के अंदर कहीं माटाखान है नहीं। भागीरथी और भीलांगना, दो नदियों के तटों पर बसे हुए शहर की मिट्टी इस कदर रेतीली है कि उससे चूल्हों की लिपाई का काम नहीं किया जा सकता। आने वाले नए-नए किराएदार भी एक बार अपने घर के आँगन में उसे देख लेते हैं तो अपने आप माटी वाली के ग्राहक

बन जाते हैं। घर-घर जाकर माटी बेचने वाली नाटे कद की एक हरिजन बुढ़िया- माटी वाली।

शहरवासी सिर्फ़ माटी वाली को नहीं, उसके कंटर को भी अच्छी तरह पहचानते हैं। रद्दी कपड़े को मोड़कर बनाए गए एक गोल डिल्ले के ऊपर लाल, चिकनी मिट्टी से छुलबुल भरा कनस्तर टिका रहता है। उसके ऊपर किसी ने कभी कोई ढक्कन लगा हुआ नहीं देखा। अपने कंटर को इस्तेमाल में लाने से पहले वह उसके ऊपरी ढक्कन को काटकर निकाल फेंकती है। ढक्कन के न रहने पर कंटर के अंदर मिट्टी भरने और फिर उसे खाली करने में आसानी रहती है। उसके कंटर को जमीन पर रखते-रखते सामने के घर से नौ-दस साल की एक छोटी लड़की कामिनी दौड़ती हुई वहाँ पहुँची और उसके सामने खड़ी हो गई।

"मेरी माँ ने कहा है, ज़रा हमारे यहाँ भी आ जाना।"

"अभी आती हूँ।"

क्रमशः

छात्र कार्य-

दी गई पाठ्य सामग्री को पढ़ें।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'